ISSN: 2395-7852

# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 5, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

# महाकवि कालिदास के नाटकों में पर्यावरण चित्रण

**Dr. Rajmal Malav**

Professor, Department of Sanskrit, Govt. Arts Girls College, Kota, Rajasthan, India

**सार:** उनके नाटकों में प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन अपने आप मे अद्वितीय है । सम्भवतः संसार में कोई ऐसा विरला व्यक्ति होगा जिसने सजीव प्रकृति का इतना पूर्ण एवं सूक्ष्म अध्ययन किया हो । नाटक के प्रारम्भ में महाकवि ने प्रकृति के जो घनिष्ठ प्रेम प्रस्तुत किया है। वह पर्यावरण संरक्षण की कल्पना को मूर्त रूप प्रदान करता है।

## I. परिचय

कालिदास ने अपने समस्त काव्यों एवं नाटकों में प्रकृति का निरूपण तो किया ही है, किंतु स्वतंत्र रूप से प्रकृति के चित्रण के लिए ऋतुसंहार की रचना की। ऋतुसंहार में कवि ने बाह्य प्राकृतिक सौन्दर्य के निरूपण की अपेक्षा मानव-मन पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन अधिक किया है, फिर भी ऋतुओं का स्वतंत्र चित्रण उनके प्रकृति-प्रेम का द्योतक है। ऋतुसंहार के प्रथम पद्य में ग्रीष्म ऋतु का बड़ा ही सजीव चित्रण है-

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसञ्चयः।
दिनांतरम्योस्युपशांतमन्मथों निदाद्यकालोस्यमुपागतः प्रिये॥[1]

- प्रिये! ग्रीष्म ऋतु आ गयी है। सूर्य की किरणें प्रचण्ड हो गयी हैं। चन्द्रमा सुहावना लगने लगा है। निरंतर स्नान के कारण कुँओं-तालाबों का जल प्रायः समाप्त हो चला है। सायंकाल मनोरम लगने लगा है तथा काम का वेग स्वयं शांत हो गया है। इसी प्रकार कवि का वर्षा तथा अन्य ऋतुओं का वर्णन भी सजीवता एवं कमनीयता से परिपूर्ण है। मेघदूत में तो कवि ने प्रकृति एवं मानव में तादात्म्य स्थापित कर दिया है। पूर्वमेघ में प्रधानतया प्रकृति के बाह्य रूप का चित्रण है, किंतु उसमें मानवीय भावनाओं का संस्पर्श है, मेघदूत तो वर्षा ऋतु की ही उपज है। वहाँ वर्षा से प्रभावित होने वाले समस्त जड़-चेतन पदार्थों का निरूपण है। मेघ जिस-जिस मार्ग से होकर आगे निकल जाता है उस-उस मार्ग में अपनी छाप छोड़ जाता है-

नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्द्धरूढै-
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानकच्छम्।
जग्ध्वारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाघ्राय चोर्व्याः।
सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यंति मार्गम्॥[2]

- जल बरसने के कारण पुष्पित कदम्ब को भ्रमर मस्त होकर देख रहे होंगे, प्रथम जल पाकर मुकुलित कन्दली को हरिण खा रहे होंगे और गज प्रथम वर्षाजल के कारण पृथिवी से निकलने वाली गन्ध सूँघ रहे होंगे-इस प्रकार भिन्न-भिन्न क्रियाओं को देखकर मेघ के गमन मार्ग का स्वतः अनुमान हो जाता है। प्रकृति से मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही कारण है कि वह मनुष्य के अंतःकरण को प्रभावित करती है। मेघदूत में कवि ने इसी तथ्य को उजागर किया-

मेघालोके भवति सुखिनोस्प्यन्यथावृत्ति चेतः।
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥[3]

- मेघ को देख लेने पर तो सुखी अर्थात् संयोगी जनों का चित्त कुछ का कुछ हो जाता है फिर वियोगी लोगों का क्या कहना। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख-दुःख में सहभागिनी निरूपति किया है। विरही राम को लताएँ अपने पत्ते झुका-झुका कर सीता के अपहरण का मार्ग बताती हैं, मृगियाँ दर्भाकुर चरना छोड़कर बड़ी-बड़ी आँखें दक्षिण दिशा की ओर लगाये टुकुर-टुकुर ताकती रह जाती हैं।[4]

प्रकृति चेतन एवं भावनायुक्त[1,2,3]

- कालिदास प्रकृति को चेतन एवं भावनायुक्त पाते हैं। पशु-पक्षी आदि तो चेतनवत व्यवहार करते ही है, सम्पूर्ण चराचर प्रकृति भी मानव की भाँति व्यवहार करती दिखायी देती हैं। महाकवि ने मेघ को दूत बनाकर धूम, अग्नि, जल, पवन के सम्मिश्रण रूप जड़ पदार्थ को मानव बना दिया है। वे प्रकृति में न केवल मानव की बाह्या आकृति का आरोप करते हैं अपितु उसमें सुखःदुःखादि भावों की भी सम्भावना करते हैं। वे प्रकृति को प्रायः प्रेमी अथवा प्रेमिका के रूप में देखते हैं। मेघदूत में उज्जयिनी की ओर जाते हुए मेघ को मार्ग में पड़ने वाली निर्विन्ध्या नदी विभिन्न हाव-भाव से आकृष्ट करेगी-

वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणि काञ्चीगुणायाः
संसर्पंत्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभेः।
निर्विन्ध्यायाःपथि भव रसाभ्यंतरः संनिपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥[5]

- हे मेघ! तरंगों के हलचल के कारण शब्दायमान पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी को धारण करने वाली, स्खलित प्रवाह के कारण सुन्दरतापूर्वक बहने वाली अर्थात् मस्त होकर चलने वाली और भँवर रूप नाभि को दिखाने वाली निर्विन्ध्या नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना, क्योंकि कामिनियों का हाव-भाव प्रदर्शन ही रतिप्रार्थना वचन होता है।
- महाकवि कालिदास ने प्रकृति के श्रेष्ठ तत्त्वों को ग्रहण कर उनकी अप्रस्तुत रूप में योजना की है। वे पात्रों को उपस्थित करने के लिए प्रकृति के सुन्दर तत्त्वों से सादृश्य स्थापित करते हैं। रघुवंश में राजा रघु के मुख-सौन्दर्य के वर्णन के लिए वे प्रकृति के सुन्दरतम एवं प्रसिद्ध उपमान चन्द्र का आश्रय लेते हैं।

प्रसादसुमुखे तस्मिंश्चन्द्रे च विशदप्रभे। तदा चक्षुष्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयो:॥[6]

- शरद ऋतु में रघु के खिले हुए मुख और उज्ज्वल चन्द्रमा को देखकर दर्शकों को एक-सा आनन्द मिलता था। कवियों ने नारी के शरीर की तुलना प्राय: लता से की है, किंतु कुमारसम्भव में कालिदास पार्वती को चलती-फिरती एवं फूलों से लदी लता के रूप में देखते हैं-

आवर्जिता किञ्चिदिव स्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम्।
पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा सञ्चारिणी पल्लविनी लतेव॥[7]

प्रकृति का उपदेशिका रूप

महाकवि कालिदास प्रकृति को उपदेशिका रूप में भी पाते हैं। वे प्रकृति से प्राप्त होने वाले सत्य का स्थान-स्थान पर उल्लेख करते हैं जो मानव जीवन का मार्ग-निर्देश करती है एवं आदर्श उपस्थापित करती है। मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा जल प्रदान कर उनका उपकार करता है-

नि:शब्दोस्पि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्य:।
प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥[8]

- पपीहे के जल माँगने पर मेघ बिना उत्तर दिये उन्हें सीधे जल दे देता है। सज्जनों का यह स्वभाव होता है कि जब उनसे कुछ माँगा जाय तो वे मुँह से कुछ कहे बिना, काम पूरा करके ही उत्तर दे देते हैं।
- रघुवंश में कालिदास को जल के स्वभाव से शिक्षा मिलती है। जल तो प्रकृत्या शीतल है, उष्ण वस्तु के सम्पर्क से भले ही कुछ क्षण के लिए जल में उष्णता उत्पन्न हो जाए। इसी प्रकार महात्मा भी प्रकृति से क्षमाशील होते हैं, अपराध करने पर वे कुछ क्षण के लिए ही उद्विग्न होते हैं-

स चानुनीत: प्रणतेन पश्चान्मया महर्षिर्मुदतामगच्छत्।
उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य॥[9]

प्रकृति के सहज सौन्दर्य, मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भव के अष्टम सर्ग में मिलता है, वह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्ध्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिख के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है, और प्रसंग, पात्र, देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते सूर्य की रश्मियां सरोवर के जल में लम्बी-लम्बी होकर प्रतिबिम्बित हो रही है, तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाले हो।[10]

- वृक्ष के शिखर पर बैठा मयूर ढलते सूर्य के घटते चले जाते सोने के जैसे गौरमण्डलयुक्त आतप को बैठा पी रहा है।[11]
- पूर्व में अंधेरा बढ़ रहा है, आकाश के सरोवर से सूर्य ने जैसे आतपरूपी जल को सोख लिया, तो इस सरोवर के एक कोने में जैसे कीचड़ ऊपर आ गया हो।[12]
- सूर्य के किरणों का जाल समेट लिया है, तो हिमालय के निर्झरो पर अंकित इन्द्रधनुष धीरे-धीरे मिटते जा रहे हैं।[13]
- कमल का कोश बन्द हो रहा है, पर भीतर प्रवेश करते भ्रमर को स्थान देने के लिए कमल जैसे मुंदते-मुंदते ठहर गया है।[14]
- अस्त होते सूर्य की किरणें बादलों पर पड़ रही हैं, उनकी नोंकें रक्त, पीत और कपिश हो गयी हैं, जैसे सन्ध्या ने पार्वती को दिखाने के लिये तूलिका उठा कर उन पर रंग-बिरंगी छवियाँ उकेर दी हों।[15]
- अस्त होते सूर्य ने अपना आतप सिंहों के केसर और वृक्षों के किसलयों को जैसे बाँट दिया है।[16]
- सूर्यास्त होने पर तमालपंक्ति सन्ध्यारूपी नदी का तट बन जाती है और धातुओं का रस उसका जलप्रवाह[17] ऊपर, नीचे,आगे, पीछे जहाँ देखो अंधेरा ही आँखों में भरता है, तिमिर के उल्ब में लिपटा संसार जैसे गर्भस्थ हो गया हो।[18]
- कालिदास की कल्पना खेतों और खलिहानों में रमती है, प्रकृति के सहज सौन्दर्य का मानव-सौन्दर्य से और कृत्रिम साज-सज्जा से उत्कृष्ट पाती है। कुमारसम्भव में चन्द्रमा की किरणों के लिये जौ के ताजा अंकुर का उपमान देकर उन्होंने मानों स्वर्ग को धरती से मिला दिया है-

शक्यमोषधिपतेर्नवोदया: कर्णपूरचनाकृते तव।
अप्रगल्भयवसूचिकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटै: करा॥[19]

- कहीं पर शिव को वृक्षों की टहनियों से बिछल (फिसल) कर छन-छन कर धरती पर गिरती चाँदनी के थक्के वृक्षों से टपक पड़े फूलों से लगते हैं, जिन्हें उठा-उठा कर पार्वती के केशों में सजाने का उनका मन होने लगता है-[4,5,6]

शक्यमङ्गुलिभिरुत्थितैरध: शाखिना पतितपुष्पपेशलै:।

पत्रजर्जरशशिप्रभालवैरेभिरुत्कचयितुं तवालकान्॥[20]

- प्रकृति में मानवीय राग, करुणा और हृदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं। अंधेरा रात्रि रमणी का जुड़ा है, जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है, और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर वह चूम लेता है-

अङ्गुलीभिरिव केशसञ्चयं सन्निगृह्य तिमिरं मरीचिभि:।
कुडमलीकृतसरोजलोचन चुम्बतीव रजनीमुखं शशी॥[21]

- उत्प्रेक्षा और स्वभावोक्ति उत्कृष्ट संसृष्टि कवि ने इस प्रकार के प्रकृति-चित्रणों में की है। उक्त पद्य में 'कुडमलीकृतसरोजलोचनं' कामिनी का लज्जा से नेत्र मूंदने का चित्र होने से वल्लभदेव के अनुसार स्वभावोक्ति है, जबकि 'चुम्बतीव' में समासोक्ति तथा उत्प्रेक्षा दोनों अलंकार आ गये हैं।
- महाकवि कालिदास ने यद्यपि प्राय: प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है, किंतु कुमारसम्भव के वर्षा चित्रण में भयावहता दर्शनीय है-

घोरान्धकारनिकरप्रतिमो युगांत-
कालानलप्रबलधूमनिभो नभोसन्ते।
गर्जारवैर्विघटयन्नवनीधराणां
शृङ्गाणि मेघनिवहो घनमुज्जगाम॥[22]

- कार्तिकेय के वारुणास्त्र चलाते ही भयंकर अंधेरा करती हुई प्रलय की आग से उठे हुए धुँए के समान ऐसी काली-काली घटायें आकाश में छा गयीं जिनके गर्जन से पहाड़ की चोटियों तक दरारें पड़ गयीं।

## II. विचार-विमर्श

आज के आधुनिक एवं भौतिकवादी युग में लोग प्रकृति को भूलते जा रहे हैं। प्रकृति मानव की सहचरी एवं साक्षात परमात्मा का रूप है और इसके साथ तादात्म्य में रखने से ही परमानंद की प्राप्ति होती है; क्योंकि मनुष्य जब सभी प्रकार के कृत्रिम साधनों से उब जाता है, नीरज हो जाता है तो उसको वास्तविक सुख प्रकृति के गोद में ही प्राप्त होता है। विश्व कवि कालिदास ने अपने काव्य से प्रकृति-चित्रण के दृश्यावली को सजीव, साक्षात रूप में हमारी आंखों के सामने चित्रित करते हैं।[7,8,9]
महाकवि के साथ रचनाएं विश्व प्रसिद्ध है-
गीतिकाव्य एवं खंडकाव्य-
1- ऋतूसंघाराम
2- मेघदूतम
महाकाव्य-
3- कुमारसंभवम्
4- रघुवंशम्
नाटक-
5- मालविकाग्निमित्र
6- विक्रमोर्वशीयम्
7- अभिज्ञानशाकुंतलम
इन सभी गीतिकाव्यों तथा नाटकों में महाकवि कालिदास ने प्रकृति-चित्रण को तथा प्रकृति चित्रण में वर्ण (रंग)- संयोजन की छटा, रसप्रभाव-प्रवणता और मौलिक उद्दभावानाओ को कोमलकांत पदावली में चित्रित किया है कि इस को हृदयंगम करते ही दुख-दैन्य भरे पापतापमय संसार का साथ छूट जाता है।

प्रकृति-सम्राट महाकवि कालिदास ने प्राकृतिक दृश्यों की मंदाकिनी को भारतवर्ष के काव्य-भूतल पर अविछिन्न काव्यधारा के रूप में प्रवाहमान किया है। इस काव्यधारा ने कहीं सूर्योदय के समय निकलने वाली लालिमा को, कहीं हिमालय, मेघ, पशु-पक्षी, लता, सरिता आदि के सौन्दर्य को, तो कहीं खेत और खलिहानों, वनों और उद्धयानों, नदियों और तगाडो को तो कहीं फल-फूलयुक्त वनस्पतियों, चौकड़ी भरते हिरण, वराह, नृत्य करते मयूरों, आकाश में उड़ते हंस, बक आदि का ऐसा सजीव चित्रित किया है; मानो यह प्रकृति के रूप में साक्षात दृष्टिगोचर हो रहे हों।

पृथ्वी और स्वर्ग लोक के अखिल सौन्दर्य, लावण्य एवं रमणीयता को यदि एक ही नाम से व्यक्त करना हो तो केवल कला की अथाह अनुभूति का प्रमाणिक नाम 'ऋतूसंघाराम' कहने से ही सब स्पष्ट हो जाता है। यह महाकवि की प्रथम रचना है। जिसमें प्रकृति-चित्रण के अनेकानेक चित्र अनायास ही परिलक्षित होते हैं एक श्लोक में कवि ने कहा है--

"विपांडूरं कीटरजस्तिन्नावितमं भुजंग्वाद्रकगतिप्रसपिर्तम"।

अर्थात जब बरसात का पानी घरों के दीवारों से प्रथम बार टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनाता हुआ पीले-पीले के सूखे पत्तों को हटाता हुआ ऐसा प्रतीत होता है, मानो काला भुजंग वन में विचरण कर रहा हो।

'मेघदूत' में भी प्रकृति के अनुपम वर्णन की छटा हमें बहुत ही प्रभावित करती है, कोई यक्ष जब पहाड़ी ढलान पर मेघ को देखता है तो वह यह मेघ से अत्यंत प्रभावित हो जाता है और उसी समय वह यक्ष कह उठता है-

"धूमो ज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः"।
इस प्रकार धुँआ, अग्नि, जल और वायु के समन्वित रूप मेघ का ऐसा आकार कालिदास जी चित्रित करते हैं, मानो आकाश में मेघ स्वयं ही पर्वतशिखर- जैसा सजीव हो उठता है, न केवल मेघ अपितु मानचित्र से हिमालय की तराई में बसी अलका तक के वर्णन में कालिदास ने प्रकृति के विभिन्न क्षेत्रों का इतना हृदयग्राही वर्णन किया है कि पाठक आत्ममुग्ध, मंत्रमुग्ध हो उठता है।[10,11,12]

हम यदि महाकवि कालिदास के 'कुमारसंभव' को देखें-पढ़ें तो उसने भी प्रकृति-चित्रण के ऐसे रमणीय चित्र विद्यमान हैं, जो हमे सहज ही आकृष्ट कर लेते हैं। प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में – "अस्युत्तरस्याँ दिशि देवतात्मा" (1/1) इस श्लोक में हिमालय का कालिदास ने ऐसा विशद चित्रण किया है, मनो वह प्रकृति को मापने का एक अति विशाल शुभ्रदंड हो। 'कुमारसंभव' में शिव के महिमामय स्वरूप का दर्शन भी प्रकृति-चित्रण को परिलक्षित करता है- चर्म पर बैठे समाधिस्थ शिव का जटा-जूट सर्पों से बंधा है, अपने कुछ-कुछ खुले नैनों से शारीर के भीतर चलने वाले सब पवनों को रोककर शिव इस प्रकार अचल बैठे हैं, जैसे ना बरसने वाला श्याम जलधर (बादल) हो, बिना लहरों वाला निश्चल गंभीर जलाशय हो या अचल पवन में विद्यमान दीपशिखा वाला दीपक हो।

यदि 'रघुवंशम्' को ही ले तो इसमें महाकवि ने प्रकृतिक छटारूपी मंदाकिनी को इस प्रकार प्रवाहित किया है, मानो संसार के समस्त रसिक जन उसमें गोता लगाते लगाते थक गए हों, भूल गए हों। 'रघुवंशम्' के द्वितीय सर्ग श्लोक- "पुरस्कृता वत्मरनी" में राजा दिलीप और धर्मपत्नी सुदक्षिणा के बीच नंदिनी गाय इस प्रकार से जो चित्रित होती है, मानो दिन और रात के मध्य संध्याकालीन लालिमा हो। ऐसा चित्र कालिदास जी उपस्थित कर सकते हैं। अन्य कवियों के लिए सर्वथा दुर्लभ हो और अकल्पनीय ही है।

यदि हम 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' को लें तो उसमें भी प्राकृतिक दृश्यों का ऐसा अद्भुत और मर्मस्पर्शी वर्णन है कि पाठक उसमें अभिभूत-सा हो जाता है। अभीज्ञान की नायिका अप्रतिम सुंदरी शकुंतला प्रकृति के साक्षात पुत्री परिलक्षित होती है। तपोवन के मृगों, पशु-पक्षिओं, तथा लता-पादपों के प्रति उसका हृदय बांधव-स्नेह से आप्लावित है। तपोवन की पावन प्रकृति की गोद में पली निसर्ग कन्या शकुंतला जिस समय आश्रम-तरुओं को सींचती हुई हमारे सम्मुख आती है, उस समय आश्रम के वृक्षों के प्रति शकुंतला का स्नेह ऐसा प्रतीत होता है, मानो वे उसके सहोदर हों। शकुंतला के विदाई के समय लताओं के पीले-पीले पत्ते इस प्रकार आभाहिन दृष्टिगोचर होते हैं, हिंदी को मानो वे स्वयं अश्रुपात कर रहे हो।

ऐसा ही चित्र 'विक्रमोर्वशीयम्' के प्रथम अंक में भी है- "अविर्भुते शशिनी तमसा मुच्यमानेव रात्रिः"। यहाँ चंद्रमा उदित हो रहा है और रात्रि अंधकार के परदे से निकलती जाती है तथा धुंए का आवरण क्रमशः अदृश्य होता चला जा रहा है, कगारों के गिरने से प्रकृतिक छटा की अभिव्यक्ति को चित्रित करता है, यह भी अन्यत्र दुर्लभ है।

महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों और नाटकों में प्राकृतिक दृश्यों को ऐसा चित्रांकित किया है, जिसका सौंदर्य देखते ही बनता है। कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि भी भारतीय संस्कृति के मूल्यों और आदर्शों के अनुरूप पवित्र और उदार है। तपस्या से अर्जित सौंदर्य को ही महाकवि कालिदास सफल मानते हैं। महाकवि के साहित्य का सौंदर्य और उनकी सौंदर्य-दृष्टि अनुपम है, अतुलनीय है, जिसका अनुकीर्तन शताब्दियों से हो रहा है और सदैव-सदैव होता भी रहेगा।

## III. परिणाम

महाकवि कालिदास प्रकृति के उपासक हैं। वे प्रकृति के अन्नय प्रेमी हैं, उन्होंने अंत: प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति दोनों का चित्रण किया है। उनका यह चित्रण आत्मानुभूति एवं सूक्ष्म निरीक्षण पर आधारित है। यद्यपि महाकवि ने कहीं-कहीं प्रकृति का भयावह रूप भी चित्रित किया, किंतु प्रकृति का सुकुमार रूप उन्हें अधिक प्रिय है।

प्रकृति का चित्रण: कालिदास ने अपने समस्त काव्यों एवं नाटकों में प्रकृति का निरुपण तो किया ही है, किंतु स्वतंत्र रूप से प्रकृति के चित्रण के लिए ऋतुसंहार की रचना की। ऋतुसंहार में कवि ने बाह्य प्राकृतिक सौन्दर्य के निरुपण की अपेक्षा मानव-मन पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन अधिक किया है, फिर भी ऋतुओं का स्वतंत्र चित्रण उनके प्रकृति-प्रेम का द्योतक है। मेघदूत में तो कवि ने प्रकृति एवं मानव में तादात्म्य स्थापित कर दिया है। पूर्वमेघ में प्रधानतया प्रकृति के बाह्य रूप का चित्रण है, किंतु उसमें मानवीय भावनाओं का संस्पर्श है, मेघदूत तो वर्षा ऋतु की ही उपज है। वहाँ वर्षा से प्रभावित होने वाले समस्त जड़-चेतन पदार्थों का निरूपण है। मेघ जिस-जिस मार्ग से होकर आगे निकल जाता है उस-उस मार्ग में अपनी छाप छोड़ जाता है- नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्द्धरूढै-

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 10, Issue 5, September 2023 |

राविर्भूतप्रथममुकुला:कन्दलीश्चानकच्छम।
जग्ध्वारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाध्राय चोर्वया:।
सारङ्गास्ते जललवमुच:सूचयिष्यंति मार्गम॥
जल बरसने के कारण पुष्पित कदम्ब को भ्रमर मस्त होकर देख रहे होंगे, प्रथम जल पाकर मुकुलित कन्दली को हरिण खा रहे होंगे और गज प्रथम वर्षाजल के कारण पृथिवी से निकलने वाली गन्ध सूँघ रहे होंगे-इस प्रकार भिन्न-भिन्न यिाओं को देखकर मेघ के गमन मार्ग का स्वत:अनुमान हो जाता है। प्रकृति से मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही कारण है कि वह मनुष्य के अंतन्करण को प्रभावित करती है। मेघदूत में कवि ने इसी तथ्य को उजागर किया-
मेघालोके भवति सुखिनोस्प्यन्यथावृत्ति चेत:।
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥
मेघ को देख लेने पर तो सुखी अर्थात संयोगी जनों का चित्त कुछ का कुछ हो जाता है फिर वियोगी लोगों का क्या कहना। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख-दु:ख में सहभागिनी निरूपति किया है। विरही राम को लताएँ अपने पत्ते झुका-झुका कर सीता के अपहरण का मार्ग बताती हैं, मृगियाँ दर्भाकुर चरना छोड़कर बड़ी-बड़ी आँखें दक्षिण दिशा की ओर लगाये टुकुर-टुकुर ताकती रह जाती हैं।
प्रकृति चेतन एवं भावनायुक्त: कालिदास प्रकृति को चेतन एवं भावनायुक्त पाते हैं। पशु-पक्षी आदि तो चेतनवत व्यवहार करते ही है, सम्पूर्ण चराचर प्रकृति भी मानव की भाँति व्यवहार करती दिखायी देती हैं। महाकवि ने मेघ को दूत बनाकर धूम, अग्नि, जल, पवन के सम्मिश्रण रूप जड़ पदार्थ को मानव बना दिया है। वे प्रकृति में न केवल मानव की बाह्या आकृति का आरोप करते हैं अपितु उसमें सुख: दु:खादि भावों की भी सम्भावना करते हैं। वे प्रकृति को प्राय:प्रेमी अथवा प्रेमिका के रूप में देखते हैं। मेघदूत में उजयिनी की ओर जाते हुए मेघ को मार्ग में पड़ने वाली निर्विन्ध्या नदी विभिन्न हाव-भाव से आकृष्ट करेगी-[13,14,15]
वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणि काञ्चीगुणाया:
संसर्पंत्या:स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभे:।
निर्विन्ध्याया: पथि भव रसाभ्यंतर:
संनिपत्य स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥
हे मेघ! तरंगों के हलचल के कारण शब्दायमान पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी को धारण करने वाली, स्खलित प्रवाह के कारण सुन्दरतापूर्वक बहने वाली अर्थात मस्त होकर चलने वाली और भँवर रूप नाभि को दिखाने वाली निर्विन्ध्या नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना, क्योंकि कामिनियों का हाव-भाव प्रदर्शन ही रतिप्रार्थना वचन होता है।
महाकवि कालिदास ने प्रकृति के श्रेष्ठ तत्त्वों को ग्रहण कर उनकी अप्रस्तुत रूप में योजना की है। वे पात्रों को उपस्थित करने के लिए प्रकृति के सुन्दर तत्त्वों से सादृश्य स्थापित करते हैं। रघुवंश में राजा रघु के मुख-सौन्दर्य के वर्णन के लिए वे प्रकृति के सुन्दरतम एवं प्रसिध्द उपमान चन्द्र का आश्रय लेते हैं।
प्रसादसुमुखे तस्मिंश्चन्द्रे च विशदप्रभे।
तदा चक्षुष्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयो:
शरद ऋतु में रघु के खिले हुए मुख और उवल चन्द्रमा को देखकर दर्शकों को एक-सा आनन्द मिलता था। कवियों ने नारी के शरीर की तुलना प्राय:लता से की है, किंतु कुमारसम्भव में कालिदास पार्वती को चलती-फिरती एवं फूलों से लदी लता के रूप में देखते हैं-
आवर्जिता किञ्चािदिव स्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम।
पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा सञ्चारिणी पल्लविनी लतेव॥
प्रकृति का उपदेशिका रूप: महाकवि कालिदास प्रकृति को उपदेशिका रूप में भी पाते हैं। वे प्रकृति से प्राप्त होने वाले सत्य का स्थान-स्थान पर उल्लेख करते हैं जो मानव जीवन का मार्ग-निर्देश करती है एवं आदर्श उपस्थापित करती है। मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा जल प्रदान कर उनका उपकार करता है-
नि:शब्दोस्पि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्य:।
प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थयैव॥
पपीहे के जल माँगने पर मेघ बिना उत्तर दिये उन्हें सीधे जल दे देता है। सजनों का यह स्वभाव होता है कि जब उनसे कुछ माँगा जाय तो वे मुँह से कुछ कहे बिना, काम पूरा करके ही उत्तर दे देते हैं। रघुवंश में कालिदास को जल के स्वभाव से शिक्षा मिलती है। जल तो प्रकृत्या शीतल है, उष्ण वस्तु के सम्पर्क से भले ही कुछ क्षण के लिए जल में उष्णता उत्पन्न हो जाए। इसी प्रकार महात्मा भी प्रकृति से क्षमाशील होते हैं, अपराध करने पर वे कुछ क्षण के लिए ही उद्विग्न होते हैं-
स चानुनीत:प्रणतेन पश्चान्मया महर्षिर्मुदतामगच्छत।
उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य॥
प्रकृति के सहज सौन्दर्य, मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भव के अष्टम सर्ग में मिलता है, वह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्ध्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिख के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है, और प्रसंग, पात्र, देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते सूर्य की रश्मियां सरोवर के जल में लम्बी-लम्बी होकर प्रतिबिम्बित हो रही है, तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाले हो। वृक्ष के शिखर पर बैठा मयूर ढलते सूर्य के घटते चले जाते सोने के जैसे गौरमण्डलयुक्त आतप को बैठा पी रहा है। पूर्व में अंधेरा

बढ़ रहा है, आकाश के सरोवर से सूर्य ने जैसे आतपरूपी जल को सोख लिया, तो इस सरोवर के एक कोने में जैसे कीचड़ ऊपर आ गया हो। सूर्य के किरणों का जाल समेट लिया है, तो हिमालय के निर्झरो पर अंकित इन्द्रधनुष धीरे-धीरे मिटते जा रहे हैं। कमल का कोश बन्द हो रहा है, पर भीतर प्रवेश करते भ्रमर को स्थान देने के लिए कमल जैसे मुंदते-मुंदते ठहर गया है। अस्त होते सूर्य की किरणें बादलों पर पड़ रही हैं, उनकी नोंकें रक्त, पीत और कपिश हो गयी हैं, जैसे सन्ध्या ने पार्वती को दिखाने के लिये तूलिका उठा कर उन पर रंग-बिरंगी छवियाँ उकेर दी हों। अस्त होते सूर्य ने अपना आतप सिंहों के केसर और वृक्षों के किसलयों को जैसे बाँट दिया है। सूर्यास्त होने पर तमालपंक्ति सन्ध्यारूपी नदी का तट बन जाती है और धातुओं का रस उसका जलप्रवाह ऊपर, नीचे,आगे, पीछे जहाँ देखो अंधेरा ही आँखों में भरता है, तिमिर के उल्ब में लिपटा संसार जैसे गर्भस्थ हो गया हो। कालिदास की कल्पना खेतों और खलिहानों में रमती है, प्रकृति के सहज सौन्दर्य का मानव-सौन्दर्य से और कृत्रिम साज-सजा से उत्कृष्ट पाती है। कुमारसम्भव में चन्द्रमा की किरणों के लिये जौ के ताजा अंकुर का उपमान देकर उन्होंने मानों स्वर्ग को धरती से मिला दिया है-
शक्यमोषधिपतेर्नवोदया:कर्णपूरचनाकृते तव।

अप्रगल्भयवसूचिकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटै:करा॥
कहीं पर शिव को वृक्षों की टहनियों से बिछल (फिसल) कर छन-छन कर धरती पर गिरती चाँदनी के थक्के वृक्षों से टपक पड़े फूलों से लगते हैं, जिन्हें उठा-उठा कर पार्वती के केशों में सजाने का उनका मन होने लगता है-[16,17,18]
शक्यमङ्गुलिभिरुत्थितैरध:शाखिना पतितपुष्पपेशलै:।
पत्रजर्जरशशिप्रभालवैरेभिरुत्कचयितुं तवालकान॥[19]

## IV. निष्कर्ष

प्रकृति में मानवीय राग, करुणा और हृदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं। अंधेरा रात्रि रमणी का जुड़ा है, जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है, और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर वह चूम लेता है-
अङ्गुलीभिरिव केशसञ्चयं सन्निगृह्य तिमिरं मरीचिभि:।
कुडमलीकृतसरोजलोचन चुम्बतीव रजनीमुखं शशी॥
महाकवि कालिदास ने प्राय:प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है।[20]

## संदर्भ

1 ऋतुसंहार
2 ↑ 1,22, मेघदूत
3 ↑ 1.3, मेघदूत
4 ↑ रघुवंश महाकाव्य 13।24, 25
5 ↑ 1.29, मेघदूत
6 ↑ 4.18 रघुवंश
7 ↑ 3.54 कुमारसम्भव
8 ↑ 2.57
9 ↑ 5.54 रघुवंश
10 ↑ पश्य पश्चिमदिगंतलम्बिना निर्मित मितकथे विवस्वता। दीर्घया प्रतिमया सरोम्भयां तापनीयमिव सेतुबन्धनम्॥ कुमारसम्भव 8।34
11 ↑ एष वृक्षशिखरे कृतास्पदो जातरूपरसगौरमण्डलम्। हीयमानमहरत्ययातपं पीवरोरु पिबतीव बर्हिण:॥ कुमारसम्भव, 8।36
12 ↑ पूर्वभागतिमिरप्रवृत्तिभिर्व्यक्तपङ्कमिव जातमेकत:। खं हृतातपजलं विवस्वता भाति किञ्चिदिव शेषवत्सर:॥कुमारसम्भव - 8।37
13 ↑ शीकरव्यतिकरं मरीचिभिर्दूरयत्यवनते विवस्वति। इन्द्रचापरिवेषशून्यतां निर्झरास्तव पितुर्व्रजंत्यमी॥कुमारसम्भव -8।31
14 ↑ शीकरव्यतिकरं मरीचिभिर्दूरयत्यवनते विवस्वति। इन्द्रचापरिवेषशून्यतां निर्झरास्तव पितुर्व्रजंत्यमी॥कुमारसम्भव -8।39
15 ↑ शीकरव्यतिकरं मरीचिभिर्दूरयत्यवनते विवस्वति। इन्द्रचापरिवेषशून्यतां निर्झरास्तव पितुर्व्रजंत्यमी॥कुमारसम्भव -8।45
16 ↑ शीकरव्यतिकरं मरीचिभिर्दूरयत्यवनते विवस्वति। इन्द्रचापरिवेषशून्यतां निर्झरास्तव पितुर्व्रजंत्यमी॥-8।46
17 ↑ कुमारसम्भव 8।53
18 ↑ कुमारसम्भव8।54
19 ↑ -8.62,कुमारसम्भव
20 ↑ -8।72 कुमारसम्भव

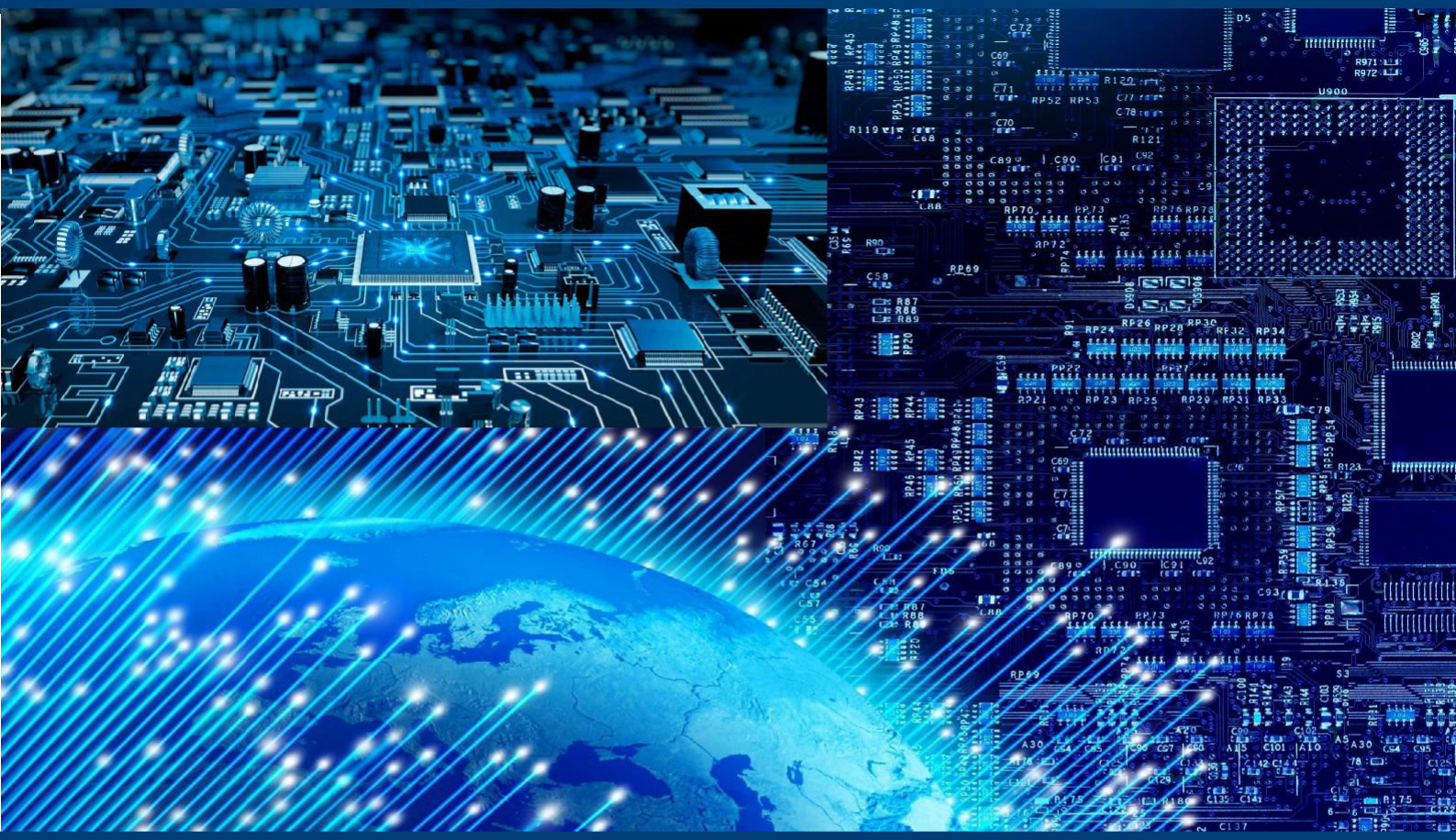


# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)



| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |